P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान के भरतपुर जिले में आर्थिक विकास एवं अपराधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शैलेन्द्र कुमार सैदावत
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
भारती विद्यापीठ विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रत्येक समाज में हर समय कुछ ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत नियमों और आदर्शों के विपरीत व्यवहार करते हैं तथा यह व्यवहार उस समाज में अपराध कहलाता है। वर्तमान समय तीव्र औद्योगिकीकरण एवं आर्थिक विकास का समय है। व्यक्ति अपनी आय बढाने का प्रयास कर रहा है। जो व्यक्ति आय नहीं बढ़ा पा रहे वे अपने आप को समाज की मुख्यधारा से अलग समझ रहे हैं। आय बढ़ाने के लिये इस प्रकार के व्यक्ति कभी–कभी अपराधों का सहारा ले रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र का विषय भरतपुर जिले में आर्थिक विकास एवं अपराध है। भरतपुर जिले में सबसे कम अपराध भार टैक्सटाइल आधारित उद्योगों का है। वन आधारित उद्योगों में रोजगार की संख्या सर्वाधिक होने के बावजूद उसका अपराध भार केवल 0.09 है। भरतपुर जिले में साइबर अपराधों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। डीग, भरतपुर व बयाना में साइबर अपराध अधिक हो रहे हैं। अपराधी बनने के पीछे कई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों भी उत्तरदायी होती हैं। इन परिस्थितियों का अध्ययन करके हम अपराधी सुधार कार्यक्रम चला सकते है। अतः हमें अपराधी शिक्षा व रोजगार पर विशेष बल देना चाहिए।

मुख्य शब्द : अपराध भार, अकार्यशील जनसंख्या, साईबर अपराध, अपराधिक प्रवृत्तियाँ।

प्रस्तावना

प्रत्येक समाज में हर समय कुछ ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो समाज द्वारा स्वीकृत नियमों और आदर्शों के विपरीत व्यवहार करते हैं तथा यह व्यवहार उस समाज में अपराध कहलाता है। अपराध का जन्म समाज के जन्म के साथ हुआ है। अतः जब तक समाज रहेगा, अपराध भी रहेगा। समाज के विकास और उसमें जटिलता की वृद्धि के साथ–साथ अपराध की दर भी बढी है। मनुष्य, प्रकृति व अपराध में सम्बन्ध इस प्रकार है;–

मनुष्य – प्रकृति का रूपान्तरणकर्ता

↓

प्रकृति का परिवर्तनकर्त्ता

↓

प्रकृति का विध्वंसकर्त्ता

↓

परिणाम

↓

अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि

वर्तमान समय तीव्र औद्योगिकीकरण एवं आर्थिक विकास का समय है। मानव की अभिलाषा व जीवन जीने का तरीका बदलता जा रहा है। व्यक्ति अपनी आय बढाने का प्रयास कर रहा है। जो व्यक्ति आय नहीं बढ़ा पा रहे वे अपने आप को समाज की मुख्यधारा से अलग समझ रहे हैं। आय बढ़ाने के लिये इस प्रकार के व्यक्ति कभी–कभी अपराधों का सहारा ले रहे हैं। धीरे–धीरे वे अपराधों के दलदल में चले जाते हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित होने के कारण भरतपुर को राजस्थान का प्रवेश द्वार कहा जाता है जिले का अक्षांशीय विस्तार $26^0 21'$ से $27^0 17'$ उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तरीय विस्तार $76^0 53'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। भरतपुर जिला मुख्यालय राज्य की राजधानी जयपुर से 180 किमी पूर्व में व देश की राजधानी दिल्ली से 160 किमी दक्षिण में स्थित है।

भरतपुर जिले की भूगर्भिक संरचना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की अवसादी एवं चतुर्थ महाकल्प की जलोढ़क चट्टाने पाई जाती है। जिले में 85 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र में बालू रेत, सिल्ट, क्ले तथा कंकर पत्थर आदि पाये जाते हैं।

भरतपुर का भौतिक स्वरूप मुख्यतया मैदानी है जिले में पहाड़ियों बिखरे हुए रूप में पायी जाती है। समतल क्षेत्र होने के कारण यहां पर नदियों द्वारा उपजाउ मैदानों का निर्माण हुआ है जिले की प्रमुख नदियों बाणगंगा, गंभीर, काकुन्द और रूपारेल है।

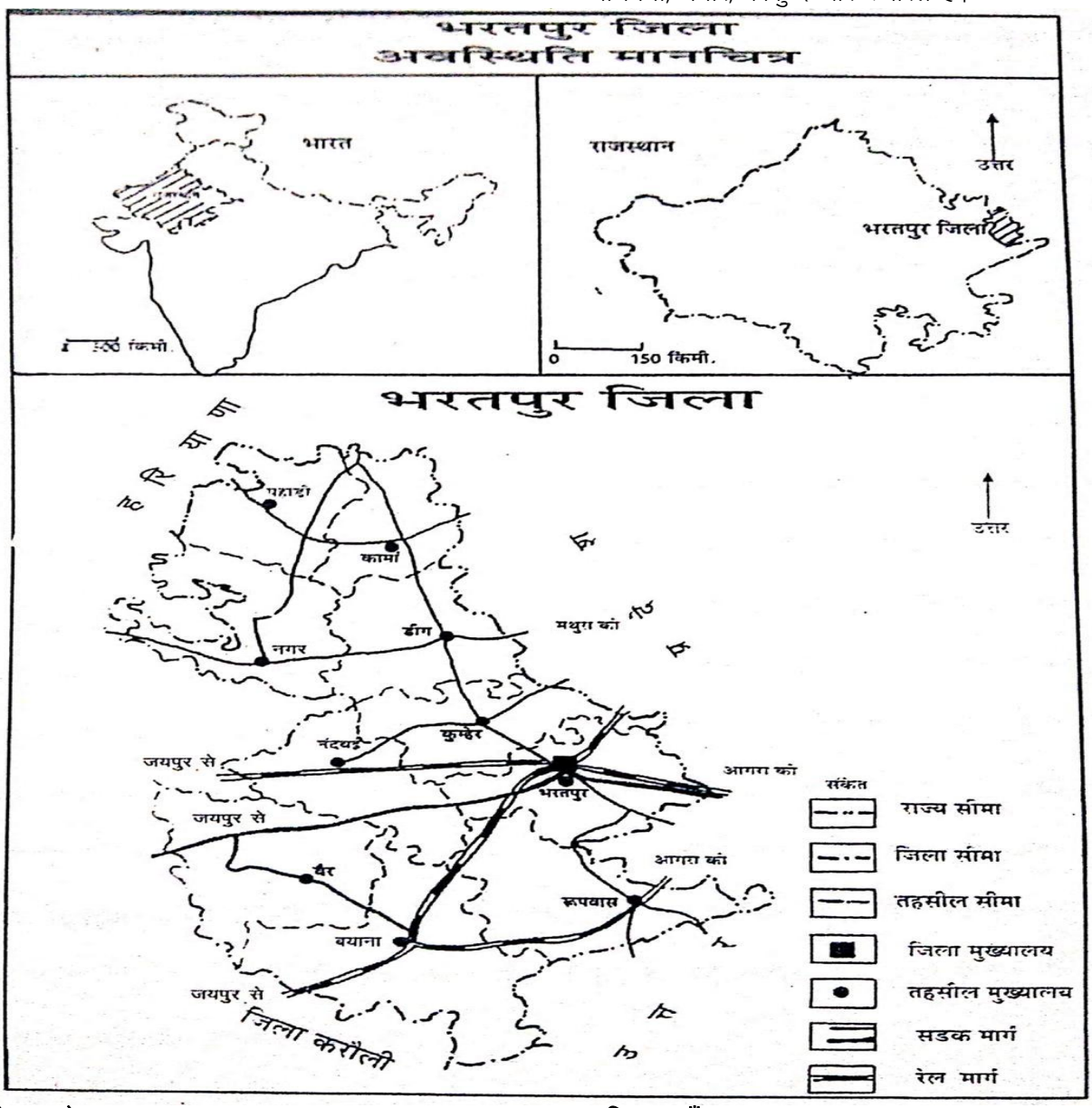

शोध उद्देश्य

1. भरतपुर जिले के औद्योगिकरण एवं अपराध भार का अध्ययन करना।
2. भरतपुर जिले की कृषि जोतों का तहसील के अनुसार अपराध भार का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. भरतपुर जिले में आर्थिक विकास के साथ–साथ अपराधिक घटनाओं में वृद्धि हो रही है।
2. भरतपुर जिले में तकनीकी विकास के साथ–साथ अपराधिक घटनाओं में वृद्धि हो रही है।

विधि तंत्र

प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। विभिन्न सांख्यिकीय विधियों जिनमें सहसम्बन्ध विश्लेषण, प्रतिगमन विश्लेषण, काई वर्ग विधि, सांख्यिकीय माध्य एवं प्रमाण विचलन आदि की सहायता से चर विश्लेषण कर शोध निष्कर्ष प्राप्तकरने का प्रयास किया गया है।

द्वितीयक आंकड़े विभिन्न प्रकाशित स्त्रोतों के माध्यम से इकट्ठे किये गये हैंः–

1. जनगणना विभाग, जयपुर
2. आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, जयपुर
3. स्टेट काइम रिकार्ड ब्यूरो
4. जिला पुलिस विभाग की पत्रिकायें
5. कार्यालय पुलिस अधीक्षक, भरतपुर

औद्योगिकरण एवं अपराध

भरतपुर जिले में अनेक उद्योग हैं और इन उद्योगों से बहुत से व्यक्तियों को रोजगार मिलता है। इन उद्योगों में अपराध की प्रवृत्ति व प्रकार अलग–अलग है। जिससे अपराध भार भी अलग–अलग है। भरतपुर जिले में अपराध व औद्योगिकरण को निम्न तालिका में बताया गया है।

तालिका 1

औद्योगिकरण एवं अपराध 2004–2005

उद्योगों का वर्गीकरण	उद्योगों की संख्या	रोजगार संख्या	अपराध भार
कृषि आधारित	1081	4118	0.35
टैक्सटाइल्स आधारित	817	2874	0.21
रसायन रबड़ आधारित	361	1359	0.02
वन आधारित	1271	4641	0.09
चर्म आधारित	1084	3982	0.05
धातु आधारित	484	1841	0.02
ओटो मोबाइल्स इन्जी. आधारित	510	1827	0.01
खनिज आधारित इलेक्ट्रोनिक व इलेक्ट्रिक आधारित	592	1912	0.11
इलेक्ट्रोनिक व इलेक्ट्रिक आधारित	444	609	0.07
अन्य	439	1413	0.11

स्रोतः– कार्यालय महाप्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, भरतपुर

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि सबसे कम अपराध भार टैक्सटाइल आधारित उद्योगों का 0.21 है। वन आधारित उद्योगों में रोजगार की संख्या सर्वाधिक 4641 होने के बावजूद उसका अपराध भार केवल 0.09 है। इसकी एक वजह सरकार द्वारा वन क्षेत्र में लागू कानूनों की कठोरता है एवं वन्य आधारित उद्योगों में संलग्न व्यक्तियों की आय उचित होने के कारण उन्हें अन्य किसी कार्य को करने की आवश्यकता भी महसूस नहीं होती है। सर्वाधिक अपराध भार कृषि आधारित उद्योगों का 0.35 है। इसका एक कारण यह है कि कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार की संख्या सर्वाधिक है एवं इसका एक अन्य कारण यह है कि कृषि आधारित उद्योगों में व्यक्ति की आय के सीमित साधन होते हैं। इसके कारण वह अपनी आय बढ़ाने के लिए विभिन्न अपराध करने पर मजबूर होते हैं। निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि कृषि आधारित, श्रम आधारित, टैक्सटाइल आधारित, उद्योगों में रोजगार की संख्या एवं अपराध भार का अधिक होना इस तथ्य पर भी निर्भर करता है कि इन उद्योगों में संलग्न व्यक्तियों में अशिक्षा, पिछड़ापन, मद्यपान की प्रवृत्ति किस स्तर पर पाई जाती है।

कृषि जोतों का विभाजन एवं अपराध

भरतपुर जिले में सर्वाधिक अपराध भार कृषि पर है। इसका कारण यह है कि कृषि से रोजगार अधिक संख्या में प्राप्त होते हैं। फिर भी व्यक्ति की आय बढ़ाने में कृषि विफल रही है। जिससे व्यक्ति अपराध की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

तालिका में भरतपुर जिले में कृषि जोतों का विभाजन एवं अपराध का तहसीलवार अध्ययन किया गया है–

तालिका–2

कृषि जोतों का विभाजन एवं अपराध वर्ष 2004–2005

क्षेत्रफल वर्ग किमी में

तहसील	खरीफ	रबी	जायद रबी	कुल	अपराध भार (प्रतिशत में)
भरतपुर	15026	37882	25	52883	0.19
कुम्हेर	15486	39604	23	55113	0.15
नदबई	21377	34466	117	55960	0.13
डीग	16576	41570	84	58230	0.35
नगर	15323	39981	29	55333	0.11
कामां	14845	26885	145	41875	0.16
पहाड़ी	11547	30108	41	41696	0.09
बयाना	27353	324889	21	59863	0.31
वैर	31670	39147	85	70902	0.11
रूपवास	2059	40398	59	61053	0.18

स्रोत– कार्यालय जिला कलेक्टर भू.अ., भरतपुर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक कृषि जोतों का क्षेत्रफल वैर तहसील में 70902 वर्ग किमी है जबकि तहसील का अपराध भार केवल 0.11 है। वहीं सबसे कम कृषि जोत पहाड़ी तहसील में 41696 वर्ग किमी के क्षेत्रफल में जबकि पहाड़ी तहसील का अपराध भार 0.09 में कृषि जोतों का क्षेत्रफल 58230 वर्ग किमी है। इस अध्ययन से निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि कृषि जोतों के क्षेत्रपफल से सीधे तौर पर अपराध भार भले ही प्रभावित न होता हो लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि भूमिगत जोत का अधिक क्षेत्रफल वहां कृषि कार्य में संलग्न जनसंख्या का अपराध भार भले ही अन्य व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या के अपराध भार के अधिक हो लेकिन फिर भी बेकार या अकार्यशील जनसंख्या के अपराध भार से कम ही रहता है।

सूचना प्रोद्योगिकी एवं अपराध

जैसे–जैसे आर्थिक विकास हुआ है, वैसे–वैसे सूचना प्रोद्योगिकी का भी विकास हुआ है। कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि का प्रयोग हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है। लोग कम समय में अधिक पैसा कमाने के लिये कम्प्यूटर व इंटरनेट का प्रयोग जालसाजी में कर रहे हैं। साइबर अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही है। डीग, भरतपुर व बयाना में साइबर अपराध अधिक हो रहे हैं। पुलिस के पास साइबर एक्सपर्ट की कमी होने के कारण इनका पकड़ना मुश्किल हो रहा है। भरतपुर की कृष्णा कॉलोनी में रहने वाले हितेश गोयल, दिनेश सचदेवा के अकाउंट से 40,000 रूपये निकाल लिये गये। इसी प्रकार रणजीत नगर में राधे मोहन गुप्ता के अकाउण्ट से 25,000 रूपये निकाल लिये गये। बहुत से ऐसे उदाहरण हैं जिनमें अपराधी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

शोधकार्य के अन्तर्गत भरतपुर जिले में सर्वाधिक अपराध भार भरतपुर शहर डीग एवं बयाना तहसीलों में दर्ज किया गया है। अशिक्षा व बेरोजगारी के कारण अपराधों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

उद्योगों में सर्वाधिक अपराध भार कृषि आधारित उद्योगों में है। कृषि से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता है। आय बढ़ाने के लिये वह विभिन्न प्रकार के अपराध करने पर मजबूर हो जाता है।

आर्थिक विकास के इस युग में अपराध के तरीके बदलते जा रहे हैं। इंटरनेट एवं कम्प्यूटर आधारित अपराधों ने जन्म ले लिया है।साईबर अपराध मुख्यतः इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों द्वारा सूचनाओं के आदान–प्रदान विशेष रूप से ई–मेल एवं ई–व्यापार के दुरूपयोग से सम्बधित है। बैंक खातों में धोखाधड़ी, एटीएम को हैक करना, मोबाईल से गोपनीय डाटा को चुराना आदि अनेक घटनाएं भरतपुर शहर में अधिक हो रही है।

सुझाव

1. आर्थिक विकास के लिये औद्योगिकरण आवश्यक है लेकिन औद्योगिकरण ने अपराध भार में वृद्धि कर दी है अतः उद्योगों में कार्यरत व्यक्ति को जीवन जीने योग्य मानदेय मिलना आवश्यक है।
2. अपराधी बनने के पीछे कई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों भी उत्तरदायी होती हैं। इन परिस्थितियों का अध्ययन करके हम अपराधी सुधार कार्यक्रम चला सकते है।
3. अशिक्षा व रोजगार का अभाव समाज में अपराधियों की संख्या को बढ़ाता है। अतः हमें अपराधी शिक्षा व रोजगार पर विशेष बल देना चाहिए।
4. भरतपुर जिले में सर्वाधिक अपराध भार कृषि में है। फसल खराब, पाला, अंधड़ आदि विपत्तियां आने पर कृषक को फसल मूल्य का 50 प्रतिशत मुआवजा मिलना चाहिए।
5. स्कूल शिक्षा में नैतिक शिक्षा पर जोर देना चाहिए जिससे समाज में उच्च आदर्श स्थापित हो सके। बच्चे अपराधिक प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर न हो सके।
6. भरतपुर जिले में सामान्य थानों के साथ–साथ साइबर थानों की स्थापना की जानी चाहिए

संदर्भ ग्रन्थ सूची

जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2016 जिला जयपुर

आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राजस्थान , जयपुर

वर्मा सीमा, 2015, 'अपराध भूगोल' नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर।

Cohan, J. 1999, "The Geography of Crime , Annals of a American Academy of Political & Social Science, Vol.27"

Chaski, Rogar S. The Prosecrtion of international crime transacation books new brunswhick.

Sharma, K.K 2004 Incidence of crime & Mordenization, Refresher Course in Geography, Department of Geography, university of rajasthan Jaipur.

Caudhary, V.K. 2001 Society v/s Geography, Social Geography, Souvnir, Abstracts, Vol.20. Nagi, D.D.U. Gorakhpur University.